गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा एक सिखावनी

पुनः प्राप्त करना, पुनः नामकरण करना, पुनः रचना करना . . .

वेदान्त में एक चिर-परिचित कथा है, एक ऐसी स्त्री की जिसे लगा कि उसने अपना गले का हार खो दिया है और उस हार को ढूँढ़ने में उसने ज़मीन-आसमान एक कर दिया। बहुत समय तक उसने अपने हार को खोजा—जबकि, सच तो यह था कि उसका हार कभी खोया ही नहीं था! वह तो पूरे समय उसके गले में ही था।

इसी तरह, परम आत्मा कभी खोती नहीं है; फिर भी एक साधक अपने जगत के हर कोने में उसे खोजता ही रहता है, खोजता ही रहता है, *खोजता* ही रहता है। ऐसा प्रतीत होता है कि माया अभेद्य है। यह ऐसा ही है मानो किसी ऐसी इमारत में फँस जाना जो घोर अन्धकार में डूबी है और जिसमें से बाहर निकलने का कोई द्वार ही दिखाई नहीं देता—इस कष्ट से जो तुमने ही अपने लिए पैदा किया है, स्वयं को बद्ध बनाए रखने का जो अनुबन्ध तुमने अपने आपसे किया है, उससे छुटकारा पाने का मानो कोई रास्ता ही नहीं है। वेदान्त में एक अन्य कथा है जो इस दशा को चित्रित करती है। यह कहानी है एक अन्धे व्यक्ति की जो एक कमरे में फँसा हुआ है और उसमें से बाहर निकलने का प्रयास कर रहा है। पर हर बार जब वह द्वार के समीप पहुँचता है तो अचानक उसे खुजली होने लगती है जिससे उसका ध्यान भटक जाता है और वह मुक्त होने का अवसर गँवा बैठता है।

ऐसा ही होता है साधना में। ऐसा ही होता है जीवन में। लोगों के मन में जो छिपे हुए संशय होते हैं, जो कहानियाँ वे गढ़ लेते हैं, सामान्यता की ज़ंजीरों में जकड़े रहने के लिए जो बहाने वे बनाते हैं, यह पक्का यक़ीन कि "मैं यह नहीं कर सकता," इन्द्रियों को सन्तुष्ट करने की इच्छा—इन सारी तथाकथित सीमितताओं को वे अपने लिए सच कर लेते हैं। ये प्रगति को अवरुद्ध करती हैं। प्रकाश झलक सके, इसके लिए *कुछ न कुछ* तो बदलना ही पड़ेगा।

प्रकृति में पुनरुद्धार की प्रक्रिया सतत चलती ही रहती है। मानव ने इस ग्रह की भूमि और इसके जल को हड़पने के लिए जो भी किया है, तथापि इस धरती ने बार-बार यह प्रमाणित किया है कि जो उसका है, उसे वह पुनः प्राप्त कर लेगी। धरती के पास स्मरणशक्ति है, चाहे उसके अभिलेख कितने ही धूमिल क्यों

न हों, चाहे उसका इतिहास कितना ही प्राचीन क्यों न हो। इसी प्रकार, साधकों के लिए यह स्वाभाविक है कि वे अपनी अन्तर्जात विपुलता को एक बार फिर से प्राप्त करने की कामना करें; वे इस दृढ़ विश्वास से प्रेरित होते हैं कि उनमें ब्रह्म है, कि आत्मा का प्रकाश उनका अपना है।

कई बार, तुम किसी चीज़ की पुनः प्राप्ति कर सकते हो, उसका पुनः नामकरण करके, उसे एक नया नाम देकर। इससे जो तुम्हारे पास हमेशा से था उसे तुम नई नज़र से, नए दृष्टिकोण से देख पाते हो। मुझे याद है जब सन् १९७८ में श्रीगुरुदेव आश्रम को एक नया नाम दिया गया, 'गुरुदेव सिद्धपीठ।' आरम्भ में, हम सबके मन में कई प्रश्न थे; आश्रम का नाम क्यों बदला गया यह विषय उलझन पैदा कर रहा था। पर जितना अधिक हम यह समझने लगे कि 'गुरुदेव सिद्धपीठ' का वास्तव में क्या अर्थ है, उतना अधिक यह नाम अपने आपमें ही एक जागृति बनता गया। आश्रम क्या है, यह पावन भूमि क्या थी और क्या है, इसका अर्थ अधिक गहराई से हमें समझ में आया। हम वास्तव में किस स्थान में हैं, इस बात को सराहने में हम और अधिक सक्षम हुए। हम यह सोचकर अभिभूत हुए कि यह एक सिद्धपीठ है, एक ऐसा स्थान जो *सभी* सिद्धों की शक्ति को, हमारे गुरु बाबा मुक्तानन्द की शक्ति को भी धारण किए हुए है।

जब कोई चीज़ आवश्यकता से अधिक जानी-पहचानी हो जाती है तो उसके प्रति लापरवाह हो जाना, उसके मूल्य को अनदेखा कर देना आसान होता है। इसीलिए यह बहुत लाभकारी है कि हमारे पास भगवान के अनेक नाम हैं। अनगिनत परम्पराओं के महात्माओं को दिव्यता की जो अनुभूतियाँ हुईं, इन नामों की उत्पत्ति वहीं से हुई है। अलग-अलग लोग भगवान को अलग-अलग नामों से पुकारना चाहेंगे। ऐसा भी हो सकता है कि एक ही साधक अपने जीवन के अलग-अलग मोड़ पर भगवान के अलग-अलग नामों के प्रति खिंचाव महसूस करे।

पुनः नामकरण करने की ऐसी क्रिया में संलग्न होना अत्यन्त लाभकारी हो सकता है। ऐसा करने से तुम अपने सत्त्व की ओर वापस लौट आने के लिए उत्सुक, जागरूक और उद्यमशील बने रहते हो। जो तुम्हारे पास हमेशा से रहा है, यह उसमें ताज़गी भर देता है। जो निधि तुम अरसे से सँजोए हुए हो, उसका मूल्य तुम्हारे लिए बढ़ जाता है। तुम्हारे विचार में इसकी उपयोगिता अधिक हो जाती है व इसे उच्च सम्मान देना और भी आसान हो जाता है।

अब, यह सारा उपक्रम करने के बाद और इतना सारा प्रयास करने के बाद, अपनी आत्मा के विषय में जो नई समझ तुम्हें प्राप्त हुई है, उसे तुम शब्दों में व्यक्त कैसे करोगे? इसकी उत्तम पावनता की अपनी अनुभूति का वर्णन तुम किस प्रकार करोगे? इसका मतलब यह नहीं है कि जो शब्द पहले से ही मौजूद हैं, उनके असाधारण अर्थ नहीं हैं या उनके प्रबल संकेतार्थ अथवा सम्बन्धित अर्थ नहीं हैं। हाँ, एक

खूबसूरत और बृहत शब्दावली तुम्हारे लिए उपलब्ध है। फिर भी, जिसे तुम एक ज़माने से जानते हो, उसके साथ जो एक नया रिश्ता तुम बना रहे हो—वह जो हमेशा से तुम्हारे सामने रहा है, उसके प्रति अब तुम जिस विशेष आत्मीयता और घनिष्ठता को महसूस कर रहे हो, उसका वर्णन करने के लिए सटीक शब्दों का मिलना एक बिलकुल अलग ही विषय है।

तुम किन शब्दों का प्रयोग करोगे? तुम्हारी क़लम से कौन-सा चित्र उभरेगा? कैसे तुम तथ्य एवं विवरण को सटीक रूप से अभिव्यक्त करोगे? और फिर, जो तुमने सीखा है, तुम उसके साथ क्या करोगे? जब तुम देखोगे कि तुम्हारी दिव्यता मन्त्रमुग्ध कर देने वाली अपनी प्रभा प्रसरित कर रही है तो कैसे तुम अपने अन्दर के आलोचक को दूर रखते हुए निर्भीक बने रहोगे? आत्मा की अपनी नवीनतम अनुभूति की महिमा का गीत तुम कैसे गाओगे—और कैसे गाते रहोगे?

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।